କୁୱି ବାସା ଜାପୁ

କୁୱି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା

कुवि बासा शिक्षा

KUWI PRIMER

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

କୁୱି ବାସା ଜାପୁ

କୁୱି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା

कुवि भाषा शिक्षा

KUWI PRIMER

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷା ଅନୁସନ୍ଧାନ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ
National Council of Educational Research & Training

କୁୱି ବାସା ଜାପୁ
କୁୱି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା
कुवि भाषा शिक्षा
KUWI PRIMER

କମିଟି :

Committee Constituted by NCERT :

Prof. B. K. Panda, Chairperson
Prof. Amarendra P Behera, Member
Dr. Rudrani Mohanty, Member
Dr. Kapila Khemandu, Member
Dr. Rajendra Padhi, Member
Dr. Gopabandhu Mohanty, Member
Dr. Subrat Prusty, Member
Dr. Mahendra Kumar Mishra, Member
Sri Dileswar Rana, Member
Dr. Paramananda Patel, Coopted Member
Dr. Govinda Chandra Penthoi, Coopted Member
Prof. Prakash Chandra Agrawal, Member-Convener

ପ୍ରସ୍ତୁତି :

Prepared by :

Dr. Mahendra Kumar Mishra, Advisor, MLE, LLF
Shri Sibo Sankar Patnaik, Instructor
Dr. Paramananda Patel, Coordinator
Dr. Govinda Chandra Penthoi, Member
Sri Dileswar Rana, Member
Sri Suresh Khara, ERP
Sri Birendra Madangi, ERP
Sri Sana Santa, ERP
Sri Hanak Tadingi, Social Worker
Sri Trinath Khara, ERP

The material has been prepared in a workshop conducted by NCERT
in collaboration with Central University of Odisha, Koraput.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

स्वच्छ भारत

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହି ପଢ଼େଇବେ କିପରି ?

ଭାରତର ନୂତନ ଶିକ୍ଷାନୀତି-୨୦୨୦ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ-୨୦୦୩ ଅନୁସାରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତିନିବର୍ଷରୁ ଆଠବର୍ଷ ଯାଏଁ ମାତୃଭାଷା/ଘରର ଭାଷା/ସ୍ଥାନୀୟ ଭାଷା ତଥା ଆଂଚଳିକ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି। ଭାରତର ଆଦିବାସୀ ବହୁଳ ଅଂଚଳରେ ସ୍କୁଲର ଶିକ୍ଷାଦାନର ଭାଷାକୁ ପିଲାମାନେ ବୁଝି ପାରୁ ନଥିବା ହେତୁ, ଶ୍ରେଣୀରେ ଶିକ୍ଷାଦାନରେ ବାଧା ହୁଏ। ତେଣୁ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାର ପିଲାଙ୍କୁ ବାଲବାଟିକାକୁ (୩-୫)ବର୍ଷ ଆଦ୍ୟସାକ୍ଷରତା (ଶ୍ରେଣୀ ୧-୨) ଯାଏଁ ବୁନିଆଦୀ ସାକ୍ଷରତାର ପ୍ରଚଳନ କରିଛନ୍ତି। ଏଥିପାଇଁ ପିଲାଙ୍କୁ ସ୍ଥାନୀୟ ଗୀତଗପ ଜରିଆରେ ପ୍ରଥମେ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରି ପିଲାଙ୍କ ମୌନତା ଭାଂଗି ସେମାନଙ୍କୁ ମୁଖର କରିବାକୁ ହେବ। ଏହା କାହାଣୀ ବହି, ଚିତ୍ର ଓ କଥୋପକଥନ ଜରିଆରେ କରାଯିବ। ଏଥି ସହିତ ପିଲାଙ୍କର ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ, ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା ଅଭ୍ୟାସ ମଧ୍ୟ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ପୁସ୍ତକ ଅନୁସାରେ କରାଯିବ।

ଓଡ଼ିଶାର ୨୩ ପ୍ରତିଶତ ଆଦିବାସୀ। ଆଦ୍ୟଶୈଶବ କାଳରୁ ତୃତୀୟ ଶ୍ରେଣୀଯାଏ ଆଦିବାସୀ ପିଲାଙ୍କୁ ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ାଇଲେ ସେମାନଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ବିକାଶ ସହିତ ସୃଜନ ଓ କଳ୍ପନାଶକ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ। କୋରାପୁଟର କନ୍ଧ ଓ ଦେଶିଆ ପିଲାମାନେ ଶ୍ରେଣୀରେ ଓଡ଼ିଆରେ ଭଲଭାବରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରୁନାହାନ୍ତି। ତା'ଛଡ଼ା ଯେହେତୁ ଘରେ ଓଡ଼ିଆରେ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରନ୍ତି ନାହିଁ ସେମାନେ ସ୍କୁଲରେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ବହିର ପାଠ ବୁଝିପାରନ୍ତି ନାହିଁ। ଏହାର ମୂଳ କାରଣ ପିଲାଙ୍କୁ ବୁନିଆଦୀ ସାକ୍ଷରତା ସହିତ ପରିଚିତ କରାଯାଇ ନାହିଁ। ବାସ୍ତବରେ ଶ୍ରେଣୀରେ କିପରି ପିଲା ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖି ତା ସହିତ ଓଡ଼ିଆରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରିବେ, ତାହାର ଏକ ସାର୍ଥକ ପଦ୍ଧତି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ ୨୦୨୩ରେ ବିସ୍ତୃତ ଭାବେ ଦିଆଯାଇଛି। ପିଲା ପଢ଼ିଲେଖି ଶିଖିବା ପ୍ରଥମ କଥା। ଏଣୁ କୁଭି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ପୁସ୍ତକରେ ଉଭୟ ପିଲାଙ୍କ ମାତୃଭାଷା ଓ ସ୍କୁଲର ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ସମସ୍ତ ଧ୍ୱନି, ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତ୍ରାକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ସଂସ୍କୃତିରୁ ଶବ୍ଦ ସଂପଦ ସଂଯୋଗ କରି ପୁସ୍ତକ ରଚନା କରାଯାଇଛି।

ବହୁଭାଷିକ ଶିକ୍ଷାର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଘରର ଭାଷାରୁ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଆରମ୍ଭ କରି ରାଜ୍ୟଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖାଇବା। ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ କୁଭି ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ପୁସ୍ତକ କୋରାପୁଟର ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବେ ଉପାଦେୟ। ବୁନିଆଦି ସାକ୍ଷରତାର ଚାରିଗୋଟି ସୋପାନ ଅଛି। ପ୍ରଥମଟି କାହାଣୀ, କଥା ଓ ଚିତ୍ରକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରିବା। ତାପରେ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ପିଲାଙ୍କୁ ବସ୍ତୁସଂଗେ ଶବ୍ଦର ସଂପର୍କ ଚିହ୍ନାଇବା। ଶବ୍ଦରୁ ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବା। ପ୍ରତ୍ୟେକଙ୍କ ଶବ୍ଦରେ ଥିବା ଅକ୍ଷରକୁ ପିଲା ଅଲଗା କରିବା ପ୍ରକ୍ରିୟାକୁ ପାଠ୍ୟଚର୍ଯ୍ୟାରେ ଡିକୋଡିଙ୍ଗ୍ (decoding) କୁହାଯାଇଛି। ଏହି ଡିକୋଡିଙ୍ଗ୍ ଧ୍ୱନି ଓ ବର୍ଣ୍ଣର ସଂପର୍କକୁ ବୁଝାଏ। ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହିଟିକୁ କିପରି ପଢ଼ାଇବେ ତାହାର ମୂଳକଥା ତଳେ ଦିଆଗଲା।

ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ: ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ବସ୍ତୁର ନାମ କହିବେ ଓ ଶିକ୍ଷକ ପଚାରିବେ ଚିତ୍ରର ନାମ କେଉଁ ଧ୍ୱନିରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଛି। (ଯଥା- 'ଅରଲି' ଚିତ୍ର ଦେଖି ତାର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି 'ଅ' ବୋଲି ପିଲା ଚିହ୍ନିବେ।

ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ : ପିଲାଙ୍କୁ ପ୍ରଥମେ ବୁଝାଇବେ 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି କିମିତି ଦିଶୁଛି। ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ 'ଅ' ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବାକୁ କହିବେ। ୩-୪ଟି ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ ପିଲାଏ 'ଅ' ଅକ୍ଷରର ଧ୍ୱନି ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ ଓ 'ଅ' ଅକ୍ଷରକୁ ଲେଖିବାର ଅଭ୍ୟାସ କରିବେ।

ପଢ଼ିବା : ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ନିଜ ଭାଷାରେ ଶବ୍ଦ କହିବେ। ସେହି ଶବ୍ଦରୁ ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ ଆଙ୍ଗୁଠି ଲଗାଇ 'ଅରଲି' ପଢ଼ିବେ। ଅନ୍ୟ ଶବ୍ଦ ପଢ଼ି ସେହି ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଯେଉଁଠି ଅଛି ପିଲାଏ ଚିହ୍ନିବେ ଓ କହିବେ। 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି ଶବ୍ଦର ଆଦ୍ୟରେ/ ମଧ୍ୟରେ/ଓ ଶେଷରେ କିମିତି ରହିଛି ତାହା ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇବେ।

ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ଭାଷା ବହିର 'ଅ' ପଢ଼ାଇଲା ବେଳେ, 'ଅରଲି' ସହିତ ଅନ୍ୟ ୩-୪ଟି ଶବ୍ଦ ମଧ୍ୟ ଲେଖିବେ। ତାପରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଜଣ ଜଣ କରି ଡାକି ଶବ୍ଦ ପଢ଼ିବା ଓ ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନିବା କାମ କରିବେ। ଯେହେତୁ ସବୁ ଶବ୍ଦ ପିଲାର ପରିଚିତ ପୃଥିବୀରୁ ଆସିଛି ଓ ପିଲା ବହିରେ ସେହି ଚିତ୍ର ଦେଖି ଚିହ୍ନି ଓ କହି ସାରିଛନ୍ତି, ତାକୁ ପଢ଼ିବାରେ ପିଲାଏ ସହଜ ଅନୁଭବ କରିବେ। ଶବ୍ଦଟିଏ ଲେଖି ତାର ପ୍ରତ୍ୟେକ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ଅଲଗା ଅଲଗା ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ। ବର୍ଣ୍ଣ ଯୋଡ଼ି ପୂରା ଶବ୍ଦକୁ ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ। ଏଥିରେ ପିଲାର ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ଶବ୍ଦ ପରିଚୟ ଓ ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ ହେବ। ଶବ୍ଦଟି ଜଣେ ପିଲା ପଢ଼ିଲାପରେ ଅନ୍ୟସବୁ ପିଲା ବି ସାଂଗରେ ଶବ୍ଦ ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ। ଏହା ମିଳିତ ପଠନ।

ଲିଖନ : ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କୁ 'ଅରଲି' ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଲେଖିବା ଶିଖାଇବେ। 'ଅ' ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ କିମିତି କଲମ ଚଲାଇବେ ତାହା ଶିକ୍ଷକ କରିବେ। ଏହା ସହାୟକ ଲିଖନ। ତାପରେ ପିଲା ବହିରେ ଥିବା ଖାଲି ଜାଗାରେ ନିଜେ ଉପରେ ଥିବା 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣ ଦେଖି ନିଜେ 'ଅ' ଲେଖିବେ। ପିଲାଏ ଲେଖିଲା ବେଳେ ଓ ପଢ଼ିଲାବେଳେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହାୟତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ।

ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୃଷ୍ଠାରେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ ପାଇଁ ୨-୩ ଧାଡ଼ିର ଗୀତ/ବାକ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି। ତାକୁ ଗାଇ/ପଢ଼ି ପିଲାଙ୍କ ସଂଗେ ଆଲୋଚନା କରିବେ। ସ୍କୁଲ ଲାଇବ୍ରେରୀର ଶିଶୁ କାହାଣୀ ବହି ନେଇ ମଧ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଭାଷାରେ କାହାଣୀ କହି ଆଲୋଚନା କରିବେ। ମନେ ରଖିବେ, ପ୍ରଥମ-ଦ୍ୱିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀର ପିଲାଙ୍କ ସଂଗେ ମାତୃଭାଷାରେ କାହାଣୀ/ଗୀତ କହି କଥା ହେବା ଆବଶ୍ୟକ। ପୁସ୍ତକରେ ଯେତିକି ଶବ୍ଦ ଦିଆଯାଇଛି ତାହା ସାକ୍ଷରତାର ନମୁନା ମାତ୍ର। ପିଲାଏ ଶହ ଶହ ଶବ୍ଦ ଜାଣିଥାନ୍ତି। ସେମାନଙ୍କୁ ଗୋଟିଏ ବର୍ଣ୍ଣ ଥାଇ ଶବ୍ଦ ପଚାରିଲେ ସେମାନେ ଅନେକ ଶବ୍ଦ କହିପାରିବେ। (ଯିମିତିକି 'କ'ରେ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କେତେକ ଶବ୍ଦ କୁହ।)

କୁୱି ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ସାକ୍ଷରତାର ସମାନ ନିୟମ ରହିଛି। କେବଳ ଭାଷା ଅଲଗା।

ପିଲାଙ୍କ ସୁବିଧା ପାଇଁ ପ୍ରଥମେ କୁୱି ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣମାଳାରୁ ଗୀତ/ଶବ୍ଦ/ଅକ୍ଷର ଦିଆଯାଇଛି। ଏହା ଶିଖାଇଲା ବେଳେ ପିଲାଏ ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନି ଓ ଲିପି ନିଜ ମାତୃଭାଷାରୁ ଶିଖିପାରିବେ। କୁୱି ଓ ଦେଶିଆରେ ଓଡ଼ିଆର ସବୁ ବର୍ଣ୍ଣ ନାହିଁ। ତେଣୁ ପରେ ପରେ ଅବଶିଷ୍ଟ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ଓଡ଼ିଆରୁ ନିଆଯାଇଛି। ଏହିପରି ମାତୃଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତୃବାଷାରେ ନଥିବା ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ମିଶାଇ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ କୁୱି ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଛି।

ବୁନିୟାଦୀ ସାକ୍ଷରତା ଉପରେ ରାଜ୍ୟରେ ସ୍କୁଲମାନଙ୍କୁ ଯୋଗାଇଥିବା ଶିକ୍ଷକ ସହାୟକ ପୁସ୍ତକରୁ ଆପଣମାନେ ବିଶେଷ ଭାବରେ ଜାଣିପାରିବେ।

କୁୱି ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ 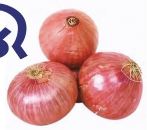	ଊ
ଋ	ଏ				

ମାତ୍ରା →	ା	ି	ୀ	ୁ	ୂ	ୃ 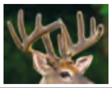	େ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଗ	ଚ	ଜ	ଟ	ଡ
ଣ	ତ	ଦ	ନ	ପ	ବ
ମ	ର	ୱ	ସ	ହ	ଯ
ଳ	ଂ	ଁ			

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଢ଼

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା (ଯାହା କୁଣ୍ଢେଇରେ ନାହିଁ)

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

	ଐ	ଓ	ଔ	
ମାତ୍ରା–	ୈ	ୋ	ୌ	

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

ଖ	ଘ	ଛ	ଙ
ଠ	ଢ	ଥ	ଧ
ଫ	ଭ	ଯ	ଳ
ଶ	ଷ	କ୍ଷ	ଡ଼
ଢ଼			

ଅର୍ଲି

ଅ

ମୂଷା

ଅର୍ଲି ଇଲୁତା ମାଚି ସାରେ
ଆର୍ନା, ହଂବରିଦୁକି
ବାରେ ରାତ୍ହା ତୁହ୍ନେ ।

ଅ-ଅଡ଼ି	ଭାଲୁ	ରଅ୍ୱା	କଳା	ଗହଅଁ	ଭାଲିଆ

ଅ ଅ ଅ ଅ ଅ

# ଆକୁ	ଆ
ପତ୍ର	୦

ହିରେଇ ଲେଂଜୁ ଓ୍ୱାହିନେ
ମାରନୁତି ଆକୁ ଡୁଲିନେ

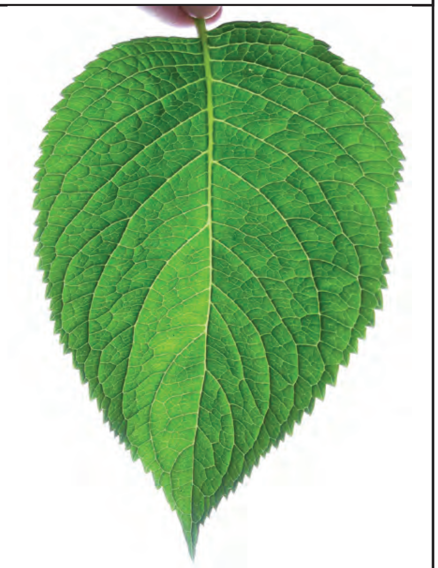

ଆଲମି	ଅଦା	ଆଂବୁ	ତୀର	ମାଂଡିଆ	ମାଂଡିଆ

ଆ ଆ ଆ ଆ ଆ

ଈଲୁ

ଈ

ଘର

ମାଁ ଈଲୁତା ମାଂବୁ ରାହାଁ ଆନମି
ମାୟା ମାବା ତଲେ ଡୟି ମାନମି ।

ଈଟ୍ଲା	ଈଟା	ଈଈରା	ମାଟି	ବିଲେଈ	ବିଲେଈ

ଈ ଈ ଈ ଈ ଈ

ଈଟା

ବର୍ଚ୍ଛା

ଈ

ହିରେଇ ପାର୍‌ବୁ ଓ୍ୱାତେ,
ଇଟା ତିଆରା ଆତେ,
ବେଟା କାମାତା ଓ୍ୱାତେ।

ଈଷ	ନାଂଗେଲି ଡାଂଡି	ଈଶ୍ୱର	ମାହାପୁରୁ	ଈ	ଈ

ଈ ଈ ଈ ଈ ଈ

ଉଲି

ଉ

ପିଆଜ

ଅର୍‌ଲି ଅତେ ଉୟୁ,
ବାଉଁଲି ତିନେ କୟୁ ।

କୁଉଲି	ଧାନ	ଲାଉ	ଲାଉ	ଅଉ	ଧାନ ବିଡ଼ା

ଉ ଉ ଉ ଉ ଉ

ଉୟୁ

ଉ

ମାଂସ

ଁ

ବାଉଁଲି ତିଚେ ଉୟୁ
ଅର୍ଲି ଉଟିଟି ହଟୁ ଏୟୁ ।

ଉଟି	ମୂଷାର ବାଡିପଟ ଦୁଆର	ଉଣ୍ଟୁ	ଓଟ	ବାଉଁଲି	ବଣ ବିଲେଇ

ଉ ଉ ଉ ଉ ଉ

ହେୟାଁ

ମୁୟାଁ

ଲେୟାଁ

ରଟି

ର

ମାଣ୍ଡିଆ ତମ୍ପା

ମାଂଡିଆ ରଟି ତିନ
ବପୁ ମାର ଆନ।

ରକା	କାନ୍ଥର କଣା	ରଆଗାଲି	ଘୁର୍ଣ୍ଣିବାୟୁ	ରଂଜା	ତୁରୁଞ୍ଜା ଫଳ

ର ର ର ର ର

ଏନ୍ଦୁ

ଏ

ନାଚ

ହିରେଇ ପାର୍ବୁ ରାହାଁକେ
କିଂଦରି ଏଂଦୁ ରାହାଁକେ

ଏସିକ୍ୟୁ	ପାଣିକୁଆ	କି–ଏଣି	ଜଡ଼ା	ରଣ୍ଡି–ଏ	ଗୋଟିଏ

ଏ ଏ ଏ ଏ ଏ

କୁପି

କ

କଂକଡ଼ା

କୁପିଁ ଆହ୍ନ ଜଲାତା
ହୁଡା ତିନ ବାଡ଼ାତା

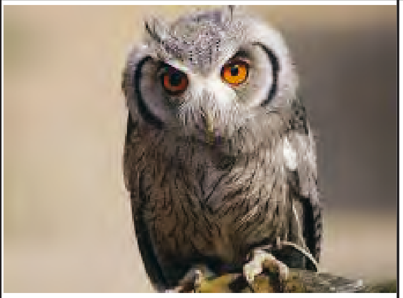

କଡି	ଗାଈ	କର୍‌କଟି	ପେଚା	ହେକ	ଦୂର

କ କ କ କ କ

ଗରି

ଛେଲି

ଗ

ଶୁକୁରୁ ଗରିଆଁ ମେଚାଲି ହାଚେସି
ଗଚାୟାଁ ଡିଂଜାଲି ହିତେସି

ଗଡ଼ା	ଘୋଡ଼ା	ଶଗଡ଼ି	ଶଗଡ଼	କଡ଼୍ଗି	କୋଦାଳ

ଗ ଗ ଗ ଗ ଗ

ଚିଚନି

ଚ

ଜନ୍ହିଁ

ରାଂଜାତା ଚିଚନି ଆଇନେ
ଚିଚନି ଜାନ୍ଥୁ ହାରେକା ହେନେ

ଚକ୍‌ଲେଟି	ଚକଲେଟ	କଚଟି	ବୁଢ଼ିଆଣୀ	କୁର୍‌ଚି	ଚଉକି

ଚ ଚ ଚ ଚ ଚ

ଜନା

ଜ

ମକା

ଇଚି ବପି ପାସେକା ପାଲ୍କା

ଜାଡ଼ା	ବଣ	ଗାଜରି	ଗାଜର	ପାଜି	ଘୁଷୁରି

ଜ ଜ ଜ ଜ ଜ

ଟାକୁ

ଟ

ଆଂବ ଟାକୁଆ

ମାହ୍ଆଁ ବେଟା ହାନ ଯାଦୁ,
ମାହ୍ଆଁ ଟାକୁ ଜୁପିନ ୱାଦୁ।

ଟପି	ଟୋପି	ହାଟ୍ୱା	ଟଟୁ	ବାଲ୍ଟି	ବାଲ୍ଟି

ଟ ଟ ଟ ଟ ଟ

ଡକା

ଡ

ହାଂଡି

ଇଇରା ଡକାତି ଏୟୁ
କାରା ବେଲାତା ହିତ୍ଡ଼ି ଡ଼ୟିନୁ।

ଡରି	ଦଉଡ଼ି	କାଡା	ନଦୀ	କଡା	ଗୋଡ଼

ଡ ଡ ଡ ଡ ଡ

ପାଣ୍ହାଁ ଣ

ପଣସ `

ପାଣ୍ହାଁ ଆକାତଲେ ଟପିୟାଁ କିନ
ପାଣ୍ହାଁ କାଂବିସାରେ ତଅଲା ତିନ।

ପାଣ୍କି	ପନିକି	ମାଣ୍ସି	ମଣିଷ	ହିଏଣି	ହରିଣ

ମାର୍ନୁ	ଗଛ	ମାର୍ଆ	ନେଉଳ	କୁର୍ହୁ	କୁଟ୍ରା

ଣ ଣ ଣ ଣ ଣ

ଡାଢ଼ି

ଡ

କଦଳୀ

ଡାଢ଼ି ହେନେ ଗୁଡୁ ଲେହେଁ,
କାଂବିଡି ଡାଢ଼ି ହିଂଗାଲେହେଁ।

ଡୟା	ଡିମିରି	କାତ୍‌ରି	କଇଁଚି	ଗୁଡି	ପାଟି

ଡ ଡ ଡ ଡ ଡ

ଦାରା

ଦ

କବାଟ

।

ପାଂଗାତା ହାନାଟି ଦାରା ସୁଂଡିନ,
ସର୍କା ତାଣାଟି ଗେଲ୍ପି ଆନ।

ଦାଓ୍ୱଁ	ଗାଇକୁ ବାନ୍ଧିବା ଦୌଡ଼ି	ଦାମ୍ଣା	ଢମଣା	ପଦା	ଝିଅ

ଟାକା	ଟଂକା	କାଡା	ନଦୀ	ସାଣା	ଚଣା

ଦ ଦ ଦ ଦ ଦ

ନକି

ନ

ଡେକ୍ଚି

ନକିତା କାଦି ଓ୍ୱାଜାହାଁ
ଇଟିନ ଡାବ୍ଣା ପିଡ୍କାହାହାଁ।

ମିନୁ	ମାଛ	କାନୁ	ଆଖି	ମାର୍ନୁ	ଗଛ

ନ ନ ନ ନ ନ

ପଟା

ପ

ଚଢ଼େଇ

ଗଚାତା ବଣ, ବଣତା ପଟା,
ପଟାତା ଗୁଡୁୟାଁ।

ପଦା	ଝିଅ	ହେପରି	ଝାଡୁ	ହପା	ସାରୁ

ପ ପ ପ ପ ପ

ବଣ

ବ

ଚଢ଼େଇ ବସା

ମେସା ମାଇଁ ପଟା ବଣ,
ପଟା ମୁଚାଁ ତାକା ହାନ।

ବଡ଼ା	ଗୁଲ୍‌ଗୁଲା	ହାବ୍‌ଡ଼ା	ଶାବଳ	ଆବାଟି	ପୁରୁଷ

ବ ବ ବ ବ ବ

ମଣା

ମ

ମୁଣି (ବ୍ୟାଗ୍)

ମଣା ଆସାଁ ହାଟାତା ହାନ,
ମଣା ନେଂଜେ ଲେୟାଁ ତାନ।

ମଂଗରି	ମଗର	ଗୁମ୍-ଏଟି	କୁମୁଟି କୁକୁଡ଼ା	କମୁ	ଶିଙ୍ଗ

ମ ମ ମ ମ ମ

ରଣ୍ଡି | ର

ଗୋଟିଏ (ଏକ) | ୧

ଆବା ତାତେସି ଲେୟାଁ ରିଂଡି,
ନିଂଗେ ରଂଡି, ନାଂଗେ ରଂଡି ।

ରକେଟି	ରୋକେଟ୍	ବାର୍ହାଁ	ବର୍ହା	ଗେରା	ନିଶୁଣୀ

କେୟୁ	ହାତ	ମେଲୁ	ମୟୂର	ୱେଲୁ	ଧନୁ

ର ର ର ର ର

ଓ୍ୱାଲି

ପଥର

ଓ୍ୱ

ଓ୍ୱାଦୁ ଓ୍ୱାଦୁ କାହିନ,
ଓ୍ୱାଦୁ ଓ୍ୱାଦୁ ଏଂଦିନ,
ଓ୍ୱାଦୁ ଓ୍ୱାଦୁ ପାଚିନ ।

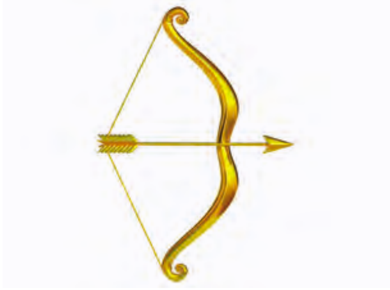

ଓ୍ୱେଲୁ	ଧନୁ	ଡଓ୍ୱେଲି	ଗାଗ୍ଡ଼ା	କାଆଓ୍ୱା	କାଉ

ଓ୍ୱ ଓ୍ୱ ଓ୍ୱ ଓ୍ୱ ଓ୍ୱ

# ସକା	# ସ
କାମିଜ	

ହିରେଇ ପର୍‌ବୁ ଓ୍ୱାନେ,
ମାୟା ହାଟାତା ହାନେ,
ସକା ନାଂଗେ ତାନେ।

ସଗଡି	ଶଗଡ଼	ମାସାଲା	ମସଲା	ଅସ	ଔଷଧ

ସ ସ ସ ସ ସ

ହଲୁ	ହ
ଚୁଲି	୍ହ
ହଲୁ ଲେକ ଡକା, ଡକା ବିତ୍‌ରା ଏୟୁ, ଏୟୁତା ମାନୁ ମାଂଜିୟାଁ।	

ହିଚୁ	ନିଆଁ	ପିହେଣି	ଭାତଚଣା ଜାଲି	ବାର୍‌ହାଁ	ବାର୍‌ହା
ପ୍ହୁଯ୍ହୁ	ଫୁଲ	କ୍ହୁଦ୍ହୁଗ୍ହୁ	ଜଂଘ	କ୍ହୁଂଦୁ	ଛତୁ

ହ ହ ହ ହ ହ

କଘୁ

ଘ

କୁକୁଡ଼ା

କଘୁ କେଁଣ୍‌ତେ,
ଲାଇ ଓ୍ୱେଇତେ
ମାଘା କାମାତାକି ତେଆରା ଆତେ ।

ପୁଘୁ	ଫୁଲ	ତଘା	ଡିମ୍ବିରି ଫଳ	ହେଘାଁ	ବାଇଗଣ

ଘ ଘ ଘ ଘ ଘ

ଲାଉ

ଲ

ଲାଉ

ବପି ଉହିତି ଲାଉ ପେଡ୍‌ନୁ,
ରାଂଜାତା ଲାଉୟାଁ ଆୟା ଡ଼ୟିନୁ।

କ-ଲୁ	ମୁଷଲ	ମେଲୁ	ମୟୂର	ଲହ	ଲୁହା

ଲ ଲ ଲ ଲ ଲ

କଂଜା

ଂ

ମାଂକଡ଼

ଗଚାଟି ଗଚାଁ ଡେଂଓ୍ୱିନେ କଂଜା
କମାତା କୁଗିନେ ମାହ୍ଆଁ ତିଂଜାଁ ।

ମାଂସ	ଉଂଗା	କଂକଡ଼ା	କୁପି	ସାଂଗ	ତୋଣେ

ମାଂଗା	ଝିଅ	ଗାଂଜା	ଗଂଜାକୁକୁଡା	ହିଂଗା	ହଳଦୀ

ଂ ଂ ଂ ଂ ଂ

ଁ

ହେୟାଁ

ବାଇଗଣ

ହେୟାଁ ତାସା ମା ବାଡ଼ାତା
ପାର୍‌ପି ଆକାନୁ ଗାଡାତା ।

ମୁୟାଁ	ଘୁଂଗୁର	କୁୟାଁ	ଘାଂଟିଆ	ନାୟୁଁ	ଗାଁ

ଁ ଁ ଁ ଁ ଁ

କଡ଼ଗି

ଡ଼

କୋଦାଳ

ଅଅଡ଼ି ଉକିତେ ପିରୁଡ଼ି, ସୁର୍ଡ଼ି
କଡ଼ଗି ଡାଗେ କାମ୍ଳିତି ତାଡ଼ି

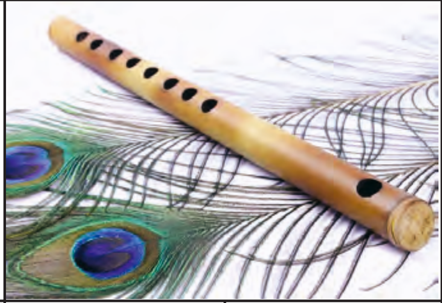

ତାଡ଼ି	କଦଳୀ	ସୁର୍ଡ଼ି	ହୁଇସିଲ	ପିରୁଡ଼ି	ବଇଁଶୀ

ଡ଼ ଡ଼ ଡ଼ ଡ଼ ଡ଼

ଐରାବତ

ଐ

ଐରାବତ - ହାତୀ

ଆସ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଐରାବତ ଚଢ଼ିବା,
ଏକତାର ପାଠପଢ଼ି ଆମ ଦେଶ ଗଢ଼ିବା ।

ଐରାବତ	ହାତୀ				

ଐ ଐ ଐ ଐ ଐ

ଓଟ	ଓ
ଉଟ୍ଟୁ	

ଓଟ ଚଢ଼ି ଆମେ ଓଡ଼ିଶା ବୁଲିବା,
ଓଉ ଗଛ ମୂଳେ ବିଶ୍ରାମ ନେବା ।

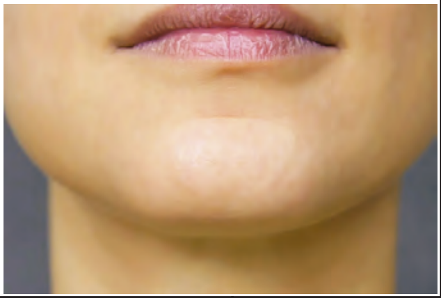

ଓଠ	ଲୁଡ଼ା	ଓଉ	ଓଉ		

ଓ ଓ ଓ ଓ ଓ

ଔଷଧ	ଔ
ଅସ	ୌ

ଔଷଧ ଖାଇ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟବାନ ହେବା,
ଖାଦ୍ୟ ଖାଇ ବଳବାନ ହେବା ।

ନୌକା	ଡଂଗା	ଲୌହ	ଲହ	ସୌଧ	ମେଡାଇଲୁ

ଔ ଔ ଔ ଔ ଔ

# ଖଟ	# ଖ
କାଟେଲି	

ଖଟ ଉପରେ ଶୋଇଲା ବେଳେ,
ବିଲେଇ ପଶିଲା ମୋ ଖଟ ତଳେ ।

ଖଲି	କଲି	ପୋଖରୀ	ବାଂନ୍ଧା	ନଖ	ଗରୁ

ଖ ଖ ଖ ଖ ଖ

ଘର

ଘ

ଇଲୁ

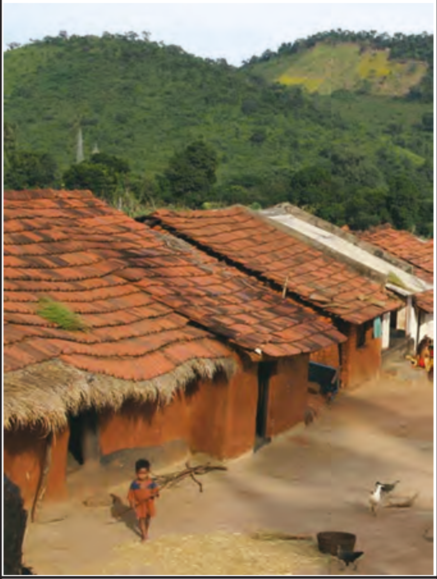

ଭଲ ଲାଗେ ମୋତେ ଘରଟି ମୋର,
ଘରେ ରହିଥିଲେ ନାହିଁ ମୋ ଡର ।

ଘଡ଼ି	ଗଂଟା	ମେଘ	ହାଗୁ	ବାଘ	କାଡ୍‌-ଆନି

ଘ ଘ ଘ ଘ ଘ

ଛତା

ଛ

ଗୁଡ୍‌ଗୁ

ଖରା ବରଷାକୁ କାମରେ ଲାଗେ,
ଛତା ଧରି ଯିବ ବାହାରେ ଯେବେ।

ଛତୁ	କୁଂଦୁ	ମାଛରଂକା	ମିନୁପଟା	ଗଛ	ମାର୍‌ନୁ

ଛ ଛ ଛ ଛ ଛ

ଝରଣା

ଝ

ଜାର୍ଣା

ଝରଣା ବହେ ଝର ଝର,

ଝରଣା ପାଣି ଭାରି ମଧୁର।

ଝିଅ	ପଦା	ଝଟା	ଜଟା	ମଝି	ମାଦି

ଝ ଝ ଝ ଝ ଝ

ପିଠା

ହେଏରା

ଠ

ପରବ ଆସୁଛି, ଘରେ ପିଠା କରିବା,
ପିଠା ଖାଇ ଆମେ ମଜା କରିବା ।

ଠେଙ୍ଗା	ଟେଂଗା	ଓଠ	ଲୁଡ୍ଡା	ମିଠା	ମିଟା

ଠ ଠ ଠ ଠ ଠ

ଢୋଲ

ଢ

ଲିସେଣି

େ ।

ଭାଲୁ ବଜାଏ ଢୋଲ ବାଜା,
ଡେଇଁ ଡେଇଁ ନାଚେ ମୂଷା ରାଜା ।

ବୁଢା	ବୁଢ୍‌ହା	ଚଢେଇ	ପଟା	ବୁଢିଆଣି	କଟଟି

ଗୋଡ	କଡା	ଗୋଟିଏ	ରଣ୍ଡିଏ	କୋଦାଳ	କଡ୍‌ଗି

ଢ ଢ ଢ ଢ ଢ

ଥାଳି

ଥ

ସାଡ଼୍ୱା

ଭାତ ଖାଇବି ମୁଁ ଥାଳିରେ ମୋର
ଡାଲି ତରକାରୀ ଭଲ ଆହାର ।

ରଥ	ରାତା	ପଥର	ୱାଲୁ	ମୁଥ	ମୁଟି

ଥ ଥ ଥ ଥ ଥ

ଧନୁ

ଧ

ଓ୍ୱେଲୁ

ଧନୁ ଶର ଧରି ଧାଇଁ ଧାଇଁ,
ଗାଁ ଲୋକେ ଗଲେ ଶିକାର ପାଇଁ ।

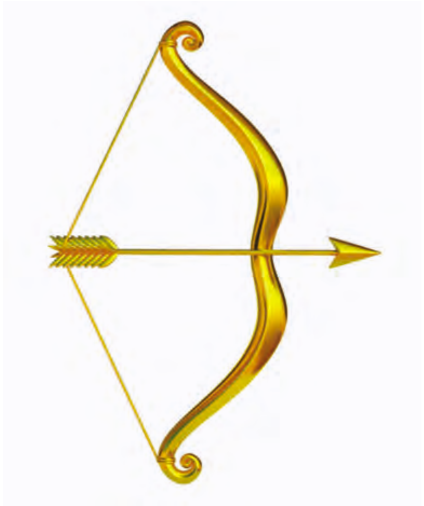

ଗଧ	ଗଦ	ଔଷଧ	ଅସ	ଧାନ	କୁଡଲି

ଧ ଧ ଧ ଧ ଧ

ଫଳ

ଫ

ପାଢ଼େଇ

ଫଳମୂଳ ଖାଅ ଆମ୍ବ ପିଜୁଳି
ସପୁରୀ, କମଳା, ଲେମ୍ବୁ, କଦଳୀ।

ଫସଲ	ଡାସା	ଫୁଟବଲ	ପୁଟୁବିଲା	ଫୁଲ	ପୁୟୁ

ଫ ଫ ଫ ଫ ଫ

ଭଅଁର

ଭ

ବଓ୍ବୁଁରା

ଭଅଁର ବସିଛି ଫୁଲ ଉପରେ,
ଖୁସିରେ ପିଉଛି ମହୁ ସେଠାରେ ।

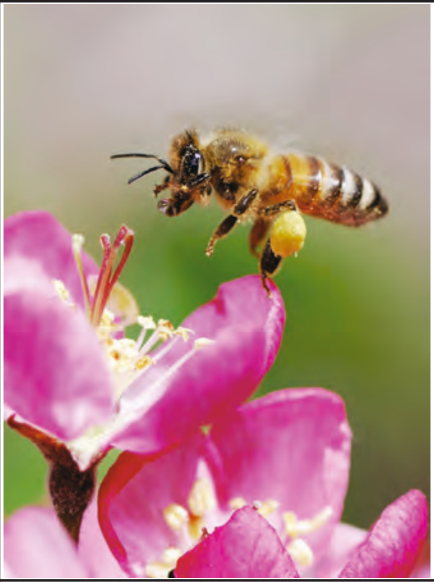

ଭାତ	ଅନ୍ଡା	ଭାଲୁ	ଅ-ଅଡ଼ି	ଭୂତ	ବୁତୁ

ଭ ଭ ଭ ଭ ଭ

ଯୁଆଲି

ଯ

ଜୁଓ୍ୱେଡ଼ି

ଯନ୍ତୁ ଖାଇଲା ଯବ,
ଯାନରେ ବୁଲିଲା ନବ ।

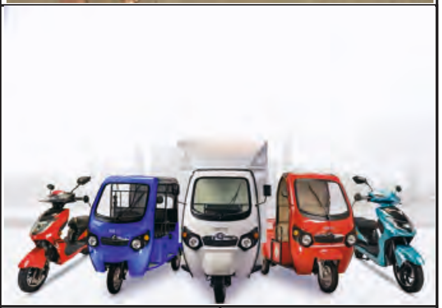

ଯନ୍ତୁ	ଜନ୍ତୁ	ଯଅ	କାଆଓ୍ୱା ଜନା	ଯାନ	ମଟର୍ ଗାଡ଼ିୟାଁ

ଯ ଯ ଯ ଯ ଯ

ଲଙ୍ଗଲ

ନାଙ୍ଗେଲି

ଲ

ସକାଲୁ ସକାଲୁ ବିଲକୁ ଯାଇ,
ଚଷୀ ହଲ କରେ ଲଙ୍ଗଲ ନେଇଁ।

ମୂଷଲ	କଲୁ	ନେଉଲ	କାର୍ନ୍ଦୁ	ମଶାଲ	ହିଚୁବନ୍ଦା

ଲ ଲ ଲ ଲ ଲ

ଶଗଡ଼

ସଗଡ଼ି

ଶ

ଶଗଡ଼ ଚଲଇ ବଳଦ ବଳେ,
ଶଗଡ଼ିଆ ନିଏଁ ଅତି କୁଶଳେ ।

ଶିଆଳ	କଲିଆ	ଶାଗୁଣା	ରାମ୍‌ଣା	ମୋଶାରୀ	ମସାରି

ଶ ଶ ଶ ଶ ଶ

ଷଣ୍ଢ ଷ

ଷଣ୍ଢ

ଷଣ୍ଢ ଚଲେ ହଲି ହଲି,
ମେଷ ଚଲେ ଢଳି ଢଳି ।

ଷୋହଳ	ଷଡ଼	ମୂଷଳ	କଲୁ	ମୂଷା	ଅରଳି

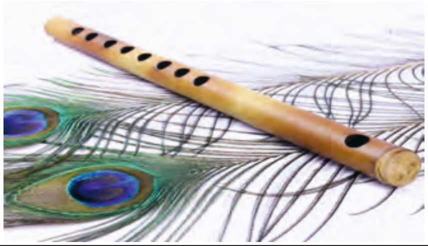

ଛଣ	ପିରି	ମହୁରୀ	ତିତିରି	ବଂଶୀ	ପିରୁଡ଼ି

ଷ ଷ ଷ ଷ ଷ

କ୍ଷୀର | କ୍ଷ

ପାଲୁ	1

ମାଁ କ୍ଷୀର ଅତି ମଧୁର,
କ୍ଷୀର ପିଇ ମୁଁ ସୁନ୍ଦର।

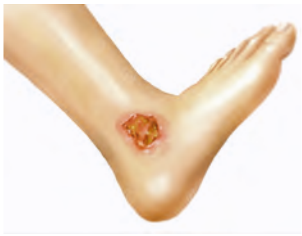

କ୍ଷୀରି	ଖିରି	କ୍ଷତ	ଗାହାଁ	ପକ୍ଷୀ	ପଟା

ଦୀପ	ଦିଉଁ	ନଦୀ	କାଡା	ମୀନ	ମିନୁ

କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ

# କଢ଼	# ଢ଼
କୁଚିପୁୟୁ	
ଫୁଲ କଢ଼ଟି ଅତି ସୁନ୍ଦର, ଚହଟି ଯାଏ ବାସନା ତା'ର ।	

ଶାଢ଼ୀ	ଡଡ଼ି	କଢ଼େଇ	କଡ଼େଇ	ବୁଢ଼ି	ବୁଡ଼୍ହି

ଢ଼	ଢ଼	ଢ଼	ଢ଼	ଢ଼

ମୂଳା

ୂ

ମୂଳା

ମୂଳା ଖାଇ ମୂଷା ଗୋଡରେ ସୂତା,
ନଳକୂପ ପାଖେ ଲମ୍ବିଛି ଲତା ।

ମୂଷା	ଅର୍ଲି	ସୂତା	ଲୁଲୁ	ନଳକୂପ	ବରିଂ

ୂ ୂ ୂ ୂ ୂ

କୃଷକ

ଋ

ତାସା କିନାସି

କୃଷି କାମ କରେ କୃଷକ ଭାଇ ,
ଖରା ବରଷାକୁ ଡରେନି ସେଇ ।

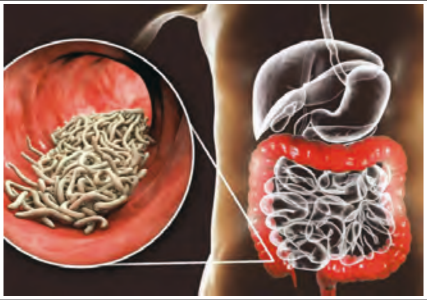

ଶୃଙ୍ଗ	ହରୁଟିପୁ	ମୃଗ	କରହୁ	କୃମି	କେସୁଆ

ଋ ଋ ଋ ଋ ଋ

ସୈନିକ

ୈ

ଜାମାନା

ସୈନିକ ବସିଛି ଶୈଳ ଉପରେ ,
ନଜର ରଖିଛି ଶତ୍ରୁ ଦିଗରେ ।

ତୈଲ	ନିୟୁଁ	ଶୈଳ	ହରୁ	ଦୀପରୁଖା	ବୈଠା

ୈ ୈ ୈ ୈ ୈ

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	
ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ		

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ		
ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	ଞ		
ଟ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ		
ତ	ଥ	ଦ	ଧ	ନ		
ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ		
ଯ	ର	ଳ	ୱ	ଶ	ଷ	ସ
ହ	କ୍ଷ	ୟ	ଲ	ଂ	ଃ	ଁ

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଡ଼	ଢ଼	ମାତ୍ରା–	ୈ	ୋ	ୌ	

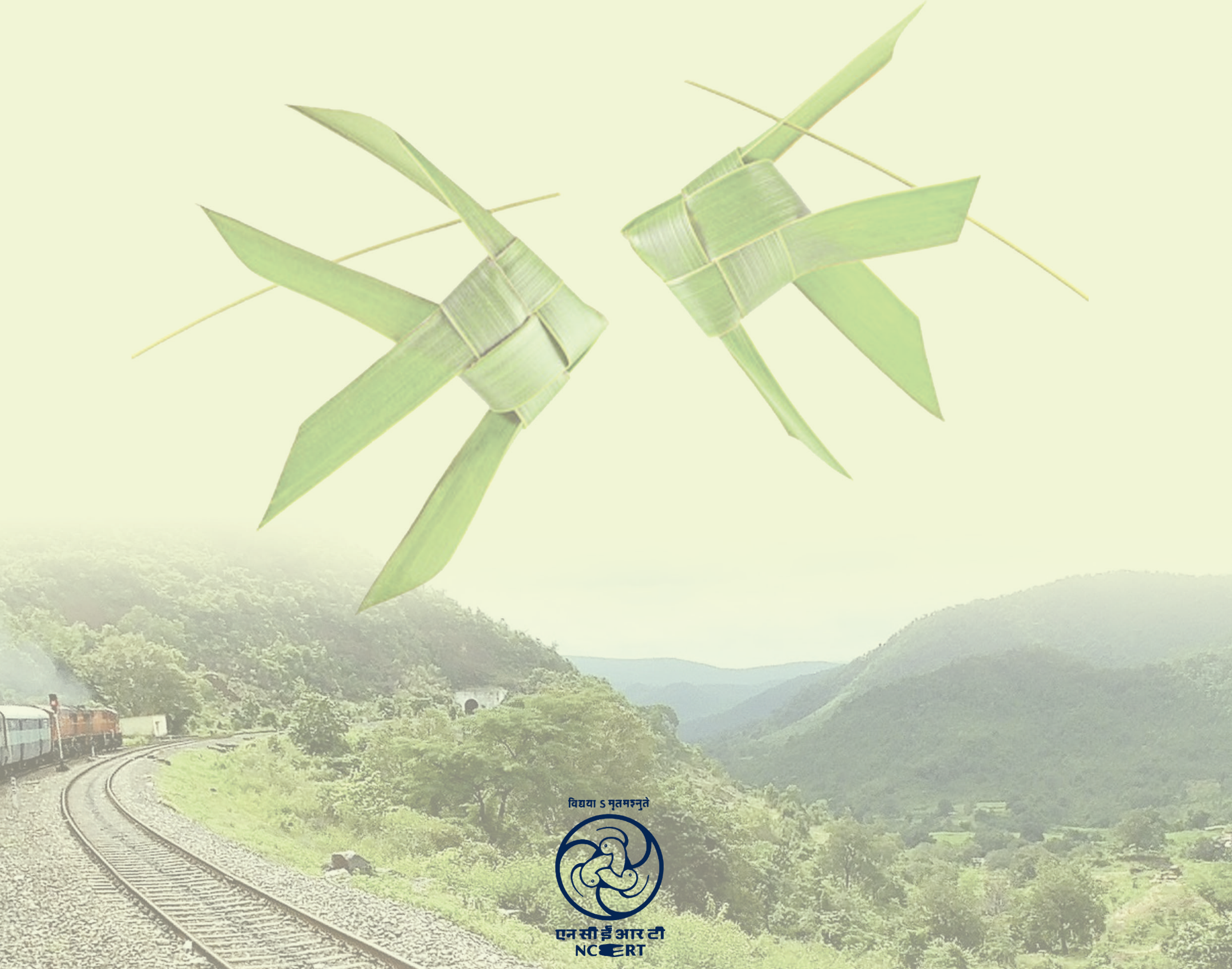

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

କୁୱି ବାସା ଜାପୁ | କୁୱି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା | कुवि बासा शिक्षा | KUWI PRIMER

National Council of Educational Research & Training
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
e-mail: dceta.ncert@nic.in